'गणराज्यों का प्रशासन'

हमें संस्कृत - साहित्य के समानान्तर पालि - साहित्य में एक ऐसे शासन व्यवस्था का पता चलता है। जिस पर संस्कृत - साहित्य या तो मौन है या उनका उल्लेख हाशिये पर है। किन्तु पालि - साहित्य के अध्ययन से इनकी पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

परम्परागत इतिहास लेखन में इस भिन्न प्रकार के शासन - व्यवस्था को प्राचीन भारत के गण तन्त्रात्मक शासन प्रणाली के रुप में उदधृत किया गया किन्तु आधुनिक इतिहास लेखन इससे भिन्न मत रखता है।

प्रो॰ काशी प्रसाद जायसवाल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दू पॉलिटी' [हिन्दू राजत्व का सिद्धान्त] में इन गणराज्यो की शासन प्रणाली

की तुलना आधुनिक गणतान्त्रिक व्यवस्था से करते हुए इन्हे प्राचीन रोमन व यूनानी गणतान्त्रिक परम्पराओं से भी प्राचीन बताया।

किन्तु आधुनिक शोध-कर्ताओं ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि इन गणतन्त्रों की उपस्थिति वही हुई थी, जहाँ वंश आधारित शासन-व्यवस्था अभी भी अपने स्वरूप को बनाये हुए थी, क्योंकि उन क्षेत्रों में अधिशेष पर आधारित राजतन्त्र की उत्पत्ति नही हो पायी थी।

इसका यह अर्थ नही था कि सभी वंश-आधारित राज्य गणतन्त्रात्मक-राज्य बन गये। उदाहरण के लिए — अगर हम विदेह की बात करें तो विदेह जो उत्तर-वैदिक साहित्य में एक राजतन्त्रात्मक शासन का प्रतिनिधित्व

करता है वही छठी शताब्दी ईसा पूर्व पालि-साहित्य में वज्जि-गणसंघ का एक गणतान्त्रिक सदस्य था। इसी तरह ऊपरी मध्य गंगा घाटी में स्थित कुरु और शूरसेन भी वंश-आधारित राज्यों से छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गणराज्यों के रूप में दीख पड़ते हैं।